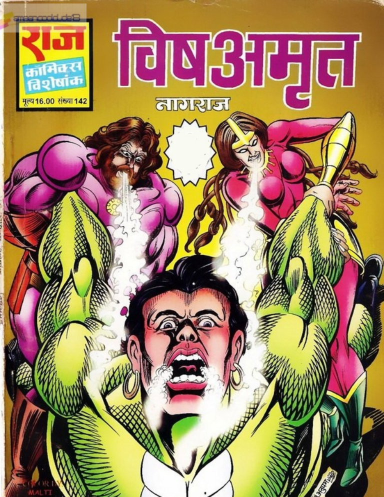
राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 142
विषअमृत
नागराज

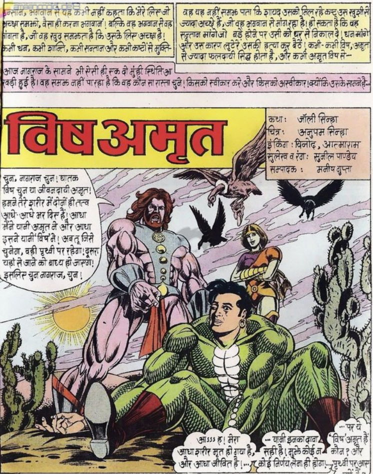


©RAJPOCKETBOOKS

महानगर की सीमा पर स्थित इस 'चिल्ड्रेंस पार्क' को महानगर महापालिका ने खास तौर पर उन लोगों के लिए डेवलप किया है, जो शहर के प्रदूषण और तनाव से दूर एक शांत दिन बिताने आते हैं-
पापा, कैच!
ओ, रोहित! मुझे दो न?
Childrens PARK
ओ, रोहित! संभल कर!
ये दोनों रोहित और शिल्पा तो बस! न जाने कितनी एनर्जी भरी है दोनों में! मैं तो देखकर ही थक जाती हूं!
पर नजर न लगे, मेरे बच्चे पढ़ने में भी उतने ही तेज हैं जितने खेलने में!
हां! पर एक खराबी भी है! किसी चीज से डरते ही नहीं हैं!
भगवान उस चीज का आविष्कार कब करेगा, जिससे मैं बच्चों को डरा कर कुछ बातें मनवा सकूं!
अरे, डरें उनके दुश्मन! पर हां, तुम तो एक चीज से डरते हो! मुझे पता है!
मैं? मैं डरता हूं! किससे? बताओ तो जरा!
मुझसे! ही ही ही ही ही!
डरते हो न?
ओ शिल्पा! पापा ने तो बॉल को ऐसा 'कट' मारा कि 'बॉल' बतख बन गई!
अब क्या करें? पापा को बताया तो कहेंगे कि जाने दो! छोड़ दो! छोड़ देंगे तो फिर हम यहां पर क्या करेंगे? घास के तिनके गिनेंगे क्या?
अरे, नहीं! ऐसे तो सारी पिकनिक का सत्यानाश हो जाएगा! आ, बॉल निकालते हैं!

कुछ ही मिनटों बाद दोनों बॉल निकालने की कोशिश कर रहे थे-
मुझे पकड़े रहना रोहित! मैंने अभी थोड़ा-थोड़ा तैरना ही सीखा है। अगर गिर गई तो मेरा स्विमिंग कोर्स अधूरा रह जाएगा!
घबरा मत! अगर हांथ छूटा तो तेरे बाल पकड़ लूंगा!
बच्चों की कोशिशें अभी जारी ही थीं-
कि तभी चिल्ड्रेंस पार्क का वातावरण एक भयंकर गुर्राहट से गूंज उठा-
यह कैसी आवाज है?
किसी जानवर की गुर्राहट है!
जंगली जानवर की आवाज लगती है, पर इस पार्क के आस-पास तो कोई चिड़ियाघर तक नहीं है। फिर ये आवाज कैसी है?
ज्यादा अंदाजा लगाने की जरूरत नहीं पड़ी-
क्योंकि जल्दी ही गुर्राहट भरने वाले गले का मालिक नजर आने लगा था-
मम्मी!
भागो!
गुरिल्ला! यह तो असली गुरिल्ला लग रहा है?
गुरिल्ला यहां पर कहां से आएगा? यहां पर न तो कोई सर्कस है, और न ही चिड़ियाघर!
यह जरूर कोई आदमी है, जो गुरिल्ले की ड्रेस पहन-कर मजाक कर रहा है!
यह मजाक नहीं है! कोई आदमी दो फुट का होता है क्या? बच्चों को ढूंढो और भागो!
रोहित! शिल्पा!
पार्क में भगदड़ मचनी शुरू हो चुकी थी-

और खतरे का आभास रोहित और शिल्पा को भी हो रहा था-
कुछ गड़बड़ है, शिल्पा! ये बतखें उस गुर्राहट से डर रही हैं! ओऽऽऽ ह!
रोहित! सेव मी! झील बहुत गहरी है!
म... मैं इसमें तैर नहीं पा रही हूं!
ओ माई गॉड! ओ मॉई गॉड! तैरना तो मुझे भी नहीं आता?
और आस-पास ऐसी कोई चीज भी नहीं दिख रही है जिसे फेंककर मैं शिल्पा को बाहर खींच लूं!
रोहित सोच में डूबा ही हुआ था-
रोहित का हाथ अपने हाथ से छूटते ही शिल्पा पानी में जा गिरी-
गुरिल्ला पास आता जा रहा था, और रोहित पागलों की तरह अपने कपड़े फाड़ता जा रहा था-
और उसके हाथ बिजली की तरह उन चीथड़ों में गांठें बांधते जा रहे थे-
कि शिल्पा एक बार फिर चीख उठी-
रोहित तुम्हारे पीछे! यही...(गड़ब) गुरिल्ला गुर्रा रहा होगा! सब भाग रहे हैं रोहित! तुम भी भाग जाओ! भइया! (गड़ब) मुझे छोड़... छोड़ दो!
म... मैं तैरकर निकल आऊंगी!
मेरी जान बचाने के लिए झूठ मत बोल बहना! या तो दोनों बचेंगे या दोनों ही डूब मरेंगे! पर मैं तुझे बचाऊंगा! तूने राखी बांधकर कई बार मुझसे रक्षा का वचन लिया है। मैं राखी की डोरी को टूटने नहीं दूंगा! नहीं टूटने दूंगा!
चिंयाऽऽऽऽ

और फिर- चीथड़ों की बनी वह रस्सी, शिल्पा की तरफ उछल गई-
इसे पकड़ शिल्पा! मैं तुम्हें खींचता हूं!
और गुरिल्ले के पास आने तक रोहित ने शिल्पा को पानी से तो निकाल लिया था-
पर तब तक समय भी निकल गया था
रोहित! यह तो एकदम पास आ गया है! हम भाग भी नहीं सकते! अब क्या करें?
रोहित और शिल्पा को कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ी। क्योंकि तभी-
मेरे बच्चों से दूर हट, शैतान!
ठड़ांक
इस वार ने गुरिल्ले का ध्यान बच्चों पर से हटाकर-
बच्चों के पापा पर ला खींचा-
और गुरिल्ले की एक सांस से पिताजी पर एक खतरनाक असर नजर आने लगा-
कुछ ही पलों बाद रोहित, गुरिल्ले की गर्दन पर चढ़ा हुआ था-
रोहित, पापा को क्या हो रहा है?
इसकी सांस जहरीली लगती है शिल्पा! मुझे पापा को इसके चंगुल से छुड़ाना होगा!
हम लोग इस दैत्य से जीत नहीं पाएंगे!...
इस दैत्य से अगर कोई निपट सकता है तो सिर्फ... नागराज!
नागराज! नागराज!

हवा में ध्वनि तरंगें फैलते ही महानगर में जगह-जगह फैले नागराज के जासूस सर्पों में से एक सर्प, उन तरंगों को महसूस करने लगा–
फन, जंगले से टकराने लगा–
और उसमें से मानसिक संकेत निकल-कर...
...एक सर्प से दूसरे सर्प तक पहुंचते हुए–
कटटट!
महानगर में एक तरफ बढ़ने लगे–
इधर चिल्ड्रेंस पार्क में बुरी तरह से उत्तेजित हो चुके गुरिल्ले ने रोहित को उसकी मौत की तरफ उछाल दिया था–
आऽऽऽह!
परन्तु मौत और रोहित के बीच में जीवन की डोर आ खिंची–
महानगर के साथ-साथ पूरी दुनिया में फैली यह कहावत गलत नहीं थी कि 'मौत और नागराज' के बीच की दौड़ में जीत हमेशा नागराज की ही होती है–
धड़ाकक
मैं बिलकुल सही समय पर यहां पहुंचा हूं। पर यह गुरिल्ला इस पार्क में कैसे आ गया? अपने आप या किसी ने जान-बूझकर इसको यहां पर छोड़ा है? और ये है कहां का? सर्कस का, चिड़ियाघर का या जंगल का!

खैर, जो भी हो, फिलहाल तो मुझे इसको जल्दी से जल्दी अपने शिकंजे में कस लेना है, वरना यह जो बरबादी फैलाएगा उसका अन्दाजा लगाना भी मुश्किल है!
मेरी सर्प रस्सी के शिकंजे इसको पकड़ने के लिए पर्याप्त रहेंगे!
नागराज ने मुसीबत को मामूली समझा था, और यह उसकी भूल थी-
क्योंकि नागरस्सी ने गुरिल्ले को जकड़ा तो जरूर, पर जकड़े रख पाने में असफल हो गई-
और नागराज के शरीर पर दो मोटी मजबूत और बालों से भरी बांहें आ कसीं-
गर्रर्रर्र र्र र्रर्रर्र
आऽऽऽ ह! मेरा... दम घुट रहा है। पसलियां कड़क रही हैं। शिकंजा आश्चर्यजनक रूप से मजबूत है।...
...मुझे इस पर विष फुंकार का प्रयोग करके इसको बेहोश करना होगा!
आर्रर्रर्रख
नागराज ने विष फुंकार का प्रयोग तो अवश्य किया, पर गुरिल्ले को चकित करने के बजाय-
उसे खुद चकित हो जाना पड़ा-
तड़ऽऽ
ओ! विष फुंकार बेअसर रही! एक गुरिल्ले पर? यह कैसे हो सकता है! असंभव! मामला कुछ और ही है, इतना सीधा-साधा नहीं जितना कि मैं समझ रहा हूं!

इसलिए अब मैं इस पर ऐसा भीषण वार करूंगा कि इसकी हड्डियों में दरारें पड़ जाएं!
धमममममम
नागराज की कलाइयों में से सर्प गोले के रूप में नाग, भीषण गति से गुरिल्ले से टकराए, और गुरिल्ले की पसलियां कड़कड़ा उठीं-
नागराज तेजी से आगे लपका, ताकि वह असंतुलित गुरिल्ले पर वह वार कर सके जो उसको बेहोश कर दे-
पर अभी गुरिल्ले के बेहोश होने का समय नहीं आया था-
आऽऽऽह!
टेप
अभी नागराज के डगमगाने का समय था-
नागराज, इतना चकित शायद कभी नहीं हुआ था-
इस गुरिल्ले की सांसों में तो एक जहर भरा हुआ है! कोई खास प्रकार का विष जिससे मैं भी परिचित नहीं हूं!
इस जहर ने मेरी आंखों के आगे अंधेरा छाने के साथ-साथ मेरे शरीर में भीषण जलन भी मचा दी है। इससे पहले कि यह जहरीला गुरिल्ला मेरी इस हालत का फायदा उठाए, मुझे संभलना होगा।
यह झील!
पानी 'सर्व विलायक' होता है। हर चीज इसमें कम या ज्यादा मात्रा में घुल जाती है! ...★
... यह मेरे शरीर पर लिपटे विष को इतना तो धो ही देगा कि मुझे संभलने का मौका मिल सके! ...
... आऽऽऽह! अब कुछ चैन पड़ा! थोड़ा विष पानी ने धो दिया, और थोड़ा मेरा शरीर इसका आदी हो गया है! अब यह विष मुझे नुकसान नहीं पहुंचा रहा है!

...यह विष सामान्य मानवों को नुकसान पहुंचा सकता है। अरे! यह गुरिल्ला मेरे पीछे झील में नहीं आ रहा है!...
...ओह! मैं तो भूल ही गया था कि गुरिल्ले पानी से डरते हैं, क्योंकि ये अच्छे तैराक नहीं होते है!
यह तो इसे पकड़ने का बहुत आसान सा तरीका मिल गया...
नागरस्सी के एक ही झटके में गुरिल्ला, झील में आ गिरा-
गुरिल्ला छटपटाया और डर तथा दम घुटने से बेहोश हो गया, परन्तु नागराज ने उसे डूबने नहीं दिया -
चलो! यह मुसीबत तो टली। अब सिर्फ यह पता करना है कि ये कहां से...
...आया था ssssss है!
धड़ाक
नागराज को अपने सवालों का जवाब जल्दी ही मिल जाना था-

क्योंकि उसे एक नहीं, बल्कि कई 'क्लू' मिल गए थे-
हे देव कालजयी! मैं तो सिर्फ गुरिल्ले को हराकर समझ रहा था कि मुसीबत टल गई है। पर यहां तो पूरा जंगल ही जमा हो गया है।... और मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि ये सबके सब गुरिल्ले की तरह ही जहरीले होंगे!
मुझे बहुत जल्दी कोई ऐसा रास्ता सोचना होगा, जो इन सबको एक साथ ठिकाने लगा सके! वरना अगर एक-एक से लड़ना पड़ा तो दूसरा मेरे चीथड़े अवश्य कर देगा!

लेकिन तीन तरफ से घिरे नागराज को सोचने का मौका नहीं मिला-
धमममम
हाथी मुझे उछाल-उछालकर मारना चाहता है, और गैंडा मुझे कुचलकर!... और इन दोनों से एक साथ निपटने का तरीका मुझे समझ में आ रहा है!
अगले ही पल नागराज उछलकर गैंडे की पीठ पर सवार हो गया था-
और अब गैंडे को नागराज ऐसे ही दिख रहा था, जैसे एक कहानी में गधे को डंडे से लटकी गाजर नजर आ रही थी-
और जैसे गधा गाजर को खाने के लिए आगे बढ़ता जा रहा था, वैसे ही गैंडा नागराज को कुचलने के लिए आगे लपकता जा रहा था-
गुड! इस अवस्था में बस मुझे इसकी जहरीली सांस से बचे रहना होगा! बाकी कोई खतरा नहीं है!

इधर-उधर हिलता नागराज, गैंडे को दिशा देता हुआ, सीधे मतवाले हाथी की तरफ ले जा रहा था-
बस! अब हाथी निशाने पर है, पर गैंडे की मेरा मुंह सामने होने के कारण हाथी नजर नहीं आ रहा है! मुझे दोनों की टक्कर होने के आखिरी पल तक इसी पोजीशन में रहना होगा!
और जैसे ही इस भीषण टक्कर का आखिरी पल आएगा...
... उसी पल में इच्छाधारी कणों में बदल जाऊंगा! और यह भीषण टक्कर दोनों को ही एक साथ बेबस कर देगी!
गैंडे का सींग, हाथी के पेट में अन्दर तक पैवस्त होकर हाथी को दर्द से तड़पा चुका था-
और साथ ही साथ इस टक्कर के झटके ने गैंडे के भी होशोहवास छीन लिए थे-

अब तीसरा दुश्मन बचा है जो सबसे ज्यादा खतरनाक है!
ओऽऽऽह!
गर्रर्रर्रर्रर्र
वैसे तो मेरे नागफनी सर्प एक पल में इस शेर का पेट फाड़ सकते हैं, पर मैं इस खूबसूरत जीव को मारना नहीं चाहता!
परन्तु अगर इसे नुकसान न पहुंचाऊं तो पकडूंगा कैसे?
मेरी अधिकतर शक्तियां तो इस पर बेकार सिद्ध होंगी! सिर्फ शारीरिक शक्ति कब तक काम आएगी!
ओह, आइडिया आ गया! अब मैं भी वही तरीका इस्तेमाल करूंगा, जो शिकारी इस्तेमाल में लाते हैं!
नागराज की कलाइयों से सैकड़ों सर्प टपककर एक दिशा में जाने लगा-
और नागराज शेर का ध्यान बंटाने में व्यस्त हो गया-
पर यह काम उसे कुछ मिनटों तक ही करना था, क्योंकि उन कुछ मिनटों के बाद-
काम हो गया है! अब बस मुझे इस शेर को खींचकर उस तरफ ले जाना है, जिधर मेरे नागों ने फंदे को तैयार कर रखा है!
ग गर्रर्रर्रर्र
अगले ही पल नागराज एक तरफ लपका! पर ज्यादा दूर नहीं भाग पाया! वह लड़खड़ाकर जमीन पर फैले पत्तों पर आ गिरा-
और उसी पल शेर ने उस पर वह घातक छलांग लगा दी-

amaancooldude18


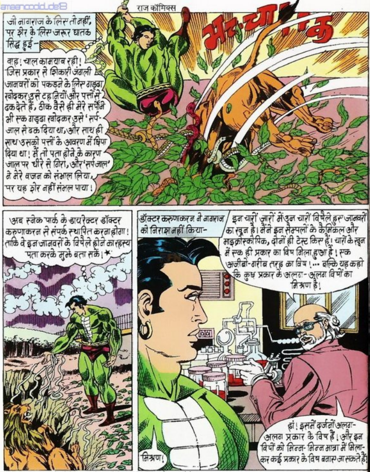


★ डॉक्टर करुणाकरन के बारे में विस्तारपूर्वक जानने के लिए पढ़ें: स्नेक पार्क

amarcomics.de

विष से अगर 'विष' मिलेगा, तो उग्र अवश्य होगा नागराज! परन्तु तुम जानते ही हो कि कोबरा के विष की 'एंटीडोट' यानी काट, बनाने का मुख्य पदार्थ कोबरा का विष ही होता है।...
...यूं समझो कि तुम्हारे शरीर के विष का कुछ भाग अपने-आप अपनी संरचना बदलकर उस विष के काट के रूप में बदल गया, जो गुरिल्लों द्वारा तुम्हारे शरीर पर छोड़ा गया था!
यह मत समझो नागराज! मैंने अभी बताया न कि ये विष कुछ विषों का मिश्रण है। अगर इसमें मिले विषों की मात्रा बदल दी जाए तो हो सकता है कि तुम्हारे शरीर में विष पैदा करने वाली कोशिकाएं उस विष की संरचना को पहचान ना पाएं, और इस कारण उसका काट भी न बना पाएं!
ओह! यानी मेरे विष का कुछ भाग... अमृत बन गया! वाह, इसका अर्थ तो यह हुआ कि ऐसे विषैले वारों से मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा!
ओह! तो फिर अगर ऐसी स्थिति सामने आ जाए, तो मुझे क्या करना चाहिए डॉक्टर करुणाकरन?
ऐसी स्थिति के लिए मैं तुमको एक खास चीज देता हूं नागराज...
यह लो! यह तुम्हारे ही अति तीक्ष्ण विष को और गाढ़ा करके, और फिर उससे बनाई गई एंटीडोट है। जहां तक मेरा ख्याल है, यह गुरिल्ले जैसे विषों वाले कई कॉम्बीनेशनों की काट साबित हो सकता है!
पर यह तो मेरे शरीर के विष को ही काट देगा! और उससे मुझे भीषण कमजोरी हो जाएगी!
यह एक ऐसा खतरा है, जो तुमको उठाना ही पड़ेगा नागराज!
आप ठीक कहते हैं। पर पहले मुझे उस विषैली शक्ति के स्रोत को ढूंढना है, जिसने जानवरों के शरीर में ऐसा घातक विष भर दिया है!
और उसको ढूंढना ज्यादा मुश्किल काम नहीं होना चाहिए!
अपने ही विष से बनी काट लेकर नागराज वहां से रवाना हो गया—

इस वक्त मुझे जानकारी चाहिए और जानकारी पाने का सबसे अच्छा स्थान है...
भारती कम्युनिकेशंस!
ओह! नागराज! आज राज के बजाय तुम आ गए! जरूर कोई खास बात है! क्या गड़बड़ हो गई है?
नागराज, भारती को सारा विवरण सुनाता चला गया-
ओह, समझी! ये देखो नागराज, इस वक्त महानगर में सिर्फ एक सर्कस लगा है। और वह चिल्ड्रेंस पार्क से कम से कम पच्चीस किलोमीटर दूर है! वहां सब ठीक-ठाक है!
महानगर जू से किसी भी जानवर के भागने की खबर नहीं आई है। और महानगर से पचास किलोमीटर के दायरे में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां से ये जानवर आ सकें!
पचास किलोमीटर के बाहर के दायरे के बारे में क्या ख्याल है भारती? यह क्या है? ग्रीन बेल्ट?
ये! ओ... ये सुभाष नेशनल पार्क है! वहीं जहां पर जानवरों को जंगल सा माहौल देकर प्राकृतिक तरीके से बढ़ने को छोड़ दिया जाता है!

तो फिर ये जानवर इसी नेशनल रिजर्व पार्क से आए होंगे! जानवरों की इतनी वैराइटी जू और सर्कस के अलावा ऐसे नेशनल पार्क में ही हो सकती है।
असंभव नागराज! और इसके दो कारण हैं। पहला यह कि सुभाष नेशनल पार्क यहां से अस्सी किलोमीटर दूर है। और दूसरा यह कि नेशनल पार्क के पास एक दूसरा बड़ा शहर राजापुर भी है। अगर जानवर नेशनल पार्क से भागे होते तो वे राजापुर जाते, जो नेशनल पार्क से सिर्फ तीन किलोमीटर दूर है!
... पर मुझे पूरा यकीन है कि ये जानवर सुभा नेशनल पार्क से ही आए हैं! अगर ये राजापु नहीं गए तो उसका जरूर कोई कारण होगा वैसे ये तुम भी मत भूलो कि नेशनल पार्क और महानगर के बीच में और कोई आबादी वाला क्षेत्र नहीं है! अगर जानवर नेशनल पार्क से महानगर की दिशा में भागते तो सीधे उसी पार्क में आते जहां पर वे आए थ वह पार्क महानगर की सीमा पर स्थित है!
हो सकता है भारती...
... और वह ये कि कहीं मेरे पीछे से महानगर पर फिर से जहरीले जानवरों का हमला न हो जाए!
चिन्ता मत करो नागराज! मैं ऐसा नहीं होने दूंगी! भारती चैनल हरदस-दस मिनट बाद वार्निंग का मैसेज दिखाएगा! जनता अपने-आप सतर्क हो जाएगी!
खैर, इसका पता तो सुभाष नेशनल पार्क पहुंचते ही लग जाएगा!
मुझे बस एक ही चिन्ता है!...
क्योंकि उसका ख्याल भी सही था, और वह स स्थान पर ही जा रहा था—
नागराज को महानगर की चिंता छोड़कर अपनी चिंता करनी चाहिए थी-

जल्दी ही नागराज अस्सी किलो-मीटर की दूरी पार करके सुभाष नेशनल पार्क तक पहुंच गया था-
हवा में एक तेज महक तैर रही है! और यह महक सुभाष नेशनल पार्क के उस छोर से आ रही है, जो राजापुर की सीमा से लगता है! ...
...उधर जाकर देखना होगा कि चक्कर क्या है? पर इतना तो स्पष्ट है कि यह महक उसी विष की है! यानी मैं सही स्थान पर आया हूं! अब बस इस विष के रहस्यमय रूप से फैलने का कारण पता लगाना है!
गराज, उस छोर की रफ बढ़ा-
और वहां र पहुंचकर उसे आश्चर्य कित हो जाना पड़ा-
ओह! उस रहस्यमय विष ने पूरे वाता-वरण में फैलकर वनस्पतियों का नाश कर दिया है! पेड़ों की पत्तियां झड़ गई हैं! पौधे सूख गए हैं! और कई जानवर इधर-उधर मरे या बेहोश पड़े हुए हैं! इसी कारण वे जानवर राजापुर की तरफ नहीं भागे! क्योंकि राजापुर के रास्ते पर विष लहरें फैली हुई थीं...
पर यह विषलहरियां फैली ? किसने फैलाया है इनको यहां पर?
मैंने!
कौन हो तुम?
पहले बता कि तू कौन है? मेरे द्वारा फैलाए गए विष से भरे इस वाता-वरण में भी अपने होश संभाले हुए है। यहां के पहरेदार तो मेरा विष सूंघते ही अपने प्राणों को त्याग बैठे थे।
मैं बेहोश नहीं होता, बल्कि बेहोश करता हूं। मैं नागराज हूं! एक इच्छाधारी मानव नाग!
अब बता कि तू कौन है?
मैं विष हूं! 'विष! विष' फैलाती हूं और प्राण हरती हूं!

मुझे जीवित चीजों से सख्त नफरत है! इधर-उधर हिलती-डुलती रहती हैं। मेरा ध्यान भंग करती हैं! इसीलिए हर जीवित वस्तु या प्राणी को मार देती हूं!
और मैं ऐसा करने की सोचने वालों की ही हिलने-डुलने से मोहताज कर देता हूं! जीवन ईश्वर की देन है। उसे मिटाने वाली तू कौन होती है?
फ्फ्फऊऊऊ
आऽऽऽ ह! तू तो बड़ा विषैला है रे! मेरे सर तक को चकरा दिया! विष के सर को! कमाल है! ऐसा विष तो मुझे ब्रह्माण्ड के किसी कोने में नहीं मिला है।
मेरा दिल तेरे विष पर आ गया है, नागराज, ला अपना सारा विष मुझे दे दे! मैं इसका प्रयोग किसी और ग्रह पर जाकर करूंगी!
स्स्र्र्र्र्र्sss
स्स्र्र्र्sss
मेरा शरीर कोई दुकान नहीं है, 'विष', और न ही मेरे सर्पअस्त्र दुकान पर बिकने वाली विष भरी बोतलें! यह विष प्रकृति के कल्याण के लिए प्रयुक्त होता है, उसके विनाश के लिए नहीं...
...हां! जो प्रकृति के विनाश पर उतर आते हैं, यह उनका विनाश अवश्य कर देता है!
फुर्र्र्र्र्र्
आऽऽऽ ह! मेरे शरीर में तेज जलन हो रही है! झुलस रहा है मेरा शरीर!
नागराज की विष फुहार ने 'विष' पर वही असर किया जो 'विष' के जहर ने नागराज पर किया था-

अब तो तेरे विष की
ाहत और तेज हो गई
! तेरे विष की जलन
की तरह तेज!
पर ये जलन ज्यादा देर तक नहीं रहेगी! 'विष' अगर विष उगलती है तो उसको निगलना भी जानती है!
'विष' तेजी से नेशनल पार्क में से कुछ खास पेड़ पौधों और झाड़ियों की पत्तियां तोड़कर एक ढेर बनाने लगी–
?
ौर फिर 'विष' के एक खास विष मिश्रण ने
स ढेर में आग लगा दी! उन पत्ते-पत्तियों
जलाता हुआ धुएं का गुबार अपने अंदर कई
षधियों के कणों को समेटे 'विष' को अपने घेरे में
े लगा–
आऽऽऽह! जलन खत्म हो गई! और अब मैं तेरा विष खींचूंगी! ठीक वैसे ही जैसे तेरे विष को काटा है!
ागराज के विष को औषधियों का वह खास
ण काटने लगा–
विष के खास 'विष मिश्रण' ने नागराज के शरीर को लपटों में घिरवा दिया–

amaancooldude18



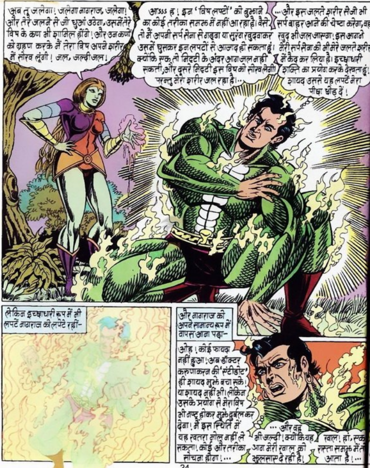

अगले ही पल, सुलगता नागराज, झाड़ियों की आड़ में लपक गया-
हा हा हा! भाग रहा है? भागेगा कहां नागराज? मौत से बचकर कोई भाग पाया है भला! पर तू कहीं भी भाग ले, तेरा धुआं मुझ तक पहुंचता ही रहेगा! और मैं तेरा जहर चूसती रहूंगी!
'विष' बात को बढ़ा चढ़ाकर नहीं कह रही थी! नागराज अपने शरीर का सुलगना नहीं रोक पाया था-
उसका शरीर झाड़ियों की झुंड में भी सुलगता जा रहा था! और धुआं विष तक पहुंचता जा रहा था-
लेकिन 'विष' को नागराज का पूरा जहर चूसने का मौका नहीं मिला-
अरे! अरे! यह क्या? ये कांटेदार सांप कहां से आ गया? और... और ये मेरा दम घोंटे दे रहा है! ऐसे मैं जहर नहीं चूस पाऊंगी!
पहले इसकी अपने जहर से गला देती हूं!
इसको तुम गला नहीं पाओगी, 'विष'...
अक! क... कौन बोला?
नागराज!...
...तू...तू...
अक! य... यहां कैसे? तू तो! अक! उधर जल रहा है!
वह मैं नहीं...

... मेरी केंचुली है! जैसे ही मुझे ध्यान आया कि मेरी खाल झुलस रही है, तभी मुझे यह भी ध्यान आया कि मैं खाल उतार सकता हूं! अपनी केंचुली के रूप में। तुम्हारी विष अग्नि अभी मेरे शरीर के अन्दर तक नहीं पहुंची थी! इसीलिए मैंने अपनी झुलसती खाल को उतार दिया! और आजाद हो गया!
तेरी शक्तियों को मैंने कम करके आंका था। पर अब मैं सीधे तेरा खून ही पियूंगी! बस! एक बार इस कांटेदार सांप से (अक) आजाद हो जाऊं!
इससे तू कभी आजाद नहीं हो सकती 'विष'! ये वे मामूली सांप नहीं हैं जो तेरे विष से गल जाएं!
मेरे पास विषों के सैकड़ों मिश्रण हैं, नागराज! किसी न किसी मिश्रण से तो ये गलेंगे ही गलेंगे!
इतना वक्त मैं तुझको नहीं दूंगा, विष...
... मेरे सर्प तेरे पैरों के नीचे एक गड्ढा खोद चुके हैं! एक बार तू जमीन में दब जाए, फिर देखते हैं कि तू अपने विष मिश्रणों का प्रयोग कैसे करती है!
आऽऽऽह! इस कैद से मैं अभी आजाद... अरे!...
... झाड़ियां फिर से खड़ी हो रही हैं! पेड़ों पर नए पत्ते निकल रहे हैं! मेरे विष का प्रभाव कम हो रहा है! खतरा! नागराज, मुझे छोड़ दे नागराज! जाने दे मुझे! जाने दे!
कभी नहीं, 'विष'! मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं, बल्कि जमीन में तब तक गाड़े रखूंगा जब तक तू बेदम नहीं हो जाती!
यह अचानक इसे क्या हो गया? और इसके विष का असर समाप्त कैसे होने लगा? कुछ गड़बड़ लगती है?
नागराज ने गड्ढे का मुंह बन्द करना शुरू कर दिया

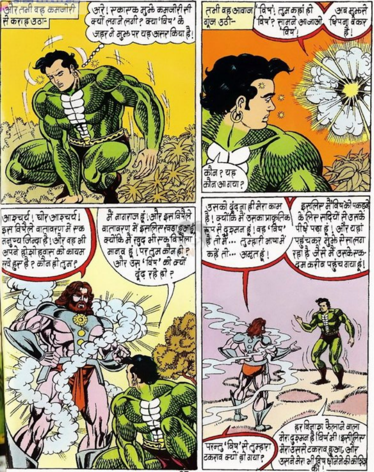
और तभी वह कमजोरी से कराह उठा-
अरे! एकाएक मुझे कमजोरी सी क्यों लगने लगी? क्या 'विष' के जहर ने मुझ पर यह असर किया है!
तभी वह आवाज गूंज उठी-
'विष'! तुम कहां हो 'विष'? सामने आजाओ 'विष'!
अब मुझसे छिपना बेकार है!
कौन? यह कौन आ गया?
आश्चर्य! घोर आश्चर्य! इस विषैले वातावरण में एक मनुष्य जिन्दा है! और वह भी अपने होशोहवास को कायम रखे हुए है? कौन हो तुम?
मैं नागराज हूं! और इस विषैले वातावरण में इसलिए खड़ा हुआ हूं क्योंकि मैं खुद भी एक विषैला मानव हूं! पर तुम कौन हो? और उस 'विष' को क्यों ढूंढ रहे हो?
उसको ढूंढना ही मेरा काम है! क्योंकि मैं उसका प्राकृतिक रूप से दुश्मन हूं! वह 'विष' है तो मैं... तुम्हारी भाषा में कहें तो... अमृत हूं!
इसलिए मैं विष को पकड़ने के लिए सदियों से उसके पीछे पड़ा हूं! और यहां पहुंचकर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं उसके एकदम करीब पहुंच गया हूं!
परन्तु 'विष' से तुम्हारा टकराव क्यों हो गया?
हर विनाश फैलाने वाला मेरा दुश्मन है 'विष' भी। इसीलिए मेरा उससे टकराव हुआ, और उसने मेरा भी विष छीनने की कोशिश की!

तुम्हारा विष चुराने की कोशिश की? यानी अतिरिक्त विष प्राप्त करने की चेष्टा की! पर ये तो नियमों के खिलाफ है!
नियम? कैसे नियम? तुम किन नियमों की बात कर रहे हो?
मेरा तात्पर्य है कि 'विष' जैसे विनाशकों के भी कुछ नियम होते हैं! ऐसा उसने आजतक नहीं किया था! ...
... खैर, जल्दी बताओ कि 'विष' कहां है? वरना वह न जाने कैसा विनाश फैला दे!
अब वह कभी विनाश नहीं फैला पाएगी, अमृत! क्योंकि मैंने उसकी यहीं पर कब्र बना दी है!
कब्र? कब्र क्या? अच्छा, जमीन में दबी है! खोदो, जल्दी खोदो! दिखाओ मुझे उसकी शक्ल! दिखाओ!
नागराज के सर्पों ने जमीन को फिर से खोदना शुरू कर दिया-
और गड्ढे के फिर से खुदते ही नागराज और अमृत दोनों ही चकित रह गए-
अरे! यहां पर तो गड्ढे के बजाय सुरंग बनी हुई है!
मैं जानता था! यह जमीनी कैद 'विष' को पकड़े नहीं रख सकती! वह अपने 'विष मिश्रण' से जमीन को गलाकर सुरंग बनाती हुई यहां से दूर जा चुकी है!
पर मुझे 'विष' को ढूंढना ही ढूंढना है! और तुम्हारे समय के अनुसार चौबीस घंटों के अन्दर-अन्दर उसे ढूंढ निकालना है...
चौबीस घंटों के अन्दर? ऐसी समय सीमा क्यों है अमृत?
यह समझा पाना बहुत मुश्किल है नागराज!
बस, तुम यह समझ लो कि अगर पृथ्वी को 'विष' के विनाश से बचाना चाहते हो तो 'विष' को ढूंढने में मेरी मदद करो!

मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं?
मैं तुम्हारे अन्दर की अद्भुत सर्पशक्तियां देख भी रहा हूं, और महसूस भी कर रहा हूं! 'विष' को ढूंढने में मेरी मदद करो! वरना वह न जाने कितने प्राणों को हर लेगी!
ऐसा मैं कतई नहीं चाहता! परन्तु पहले मैं तुम लोगों के बारे में विस्तार से जानना चाहता हूं।
ताकि मैं यह निर्णय कर पाऊं कि मैं तुम्हारी मदद कर पाऊंगा भी या नहीं!
ठीक है! मैं तुमको बताता हूं! पर साथ ही साथ 'विष' द्वारा फैलाए गए जहर को भी निष्क्रिय करता जाता हूं!...
...ताकि सब-कुछ पहले जैसा ही हो जाए!
अमृत की अमृत लहरियां वातावरण में फैले जहर को नष्ट करने लगीं-
और साथ ही साथ वृक्षों एवं झाड़ियों की मृत पड़ी पत्तियां फिर से तनकर लहराने लगीं-
जमीन पर मृत पड़े पशु, जिंदा होकर इधर-उधर भागने लगे! परन्तु साथ ही साथ कुछ और भी होने लगा-
ओह! मैंने बड़ी मुश्किल से अपने-आपको संभाला था! पर मुझ पर एक बार फिर कमजोरी का दौरा पड़ रहा है! यानी यह अमृत मेरा विष भी नष्ट कर रहा है! पहले भी मुझे इसी कारण कमजोरी हुई होगी! मुझे अपने-आपको संभालना होगा!
हां, तो सुनो नागराज, हम दोनों ब्रह्माण्ड के जिस भाग से आए हैं, वह पूरे ब्रह्माण्ड के जीवन और मृत्यु को संचालित करता है! 'विष' मृत्यु प्रदान करने वाले क्षेत्र से भागी एक मानसिक रूप से असंतुलित अपराधी है। वह समय से पहले आने वाली मृत्यु को फैला रही है! और मैं उसके प्रयासों को अमृत द्वारा विफल करता आ रहा हूं! अब तो वह असफल रही है, पर इससे पहले कि वह प्रकृति का संतुलन बिगाड़ दे, मैं उसको पकड़ लेना चाहता हूं!
परन्तु यह चौबीस घंटे वाला चक्कर क्या है?

मैंने कहा न कि उसे समझ पाना बहुत मुश्किल है!
अमृत की बाकी बातें तो सही लगती हैं! पर ये मुझसे कुछ छिपा रहा है। पहले 'नियम' वाली बात और फिर 'चौबीस घंटे' की समय सीमा! यह मुझे बात को घुमा-फिराकर समझा रहा है! मुझे तो इसका इरादा व्यक्तिगत ज्यादा लगता है, और सामाजिक कम...
...बल्कि अब तो मुझे यह भी शक हो रहा है कि 'विष' शायद अपराधी हो ही नहीं, और ये अमृत उसे अपराधी बनाकर पेश कर रहा हो!
सच शायद कुछ और ही है!
तुम चुप क्यों हो नागराज? जल्दी बोलो! मदद करोगे या नहीं?
जब तक मुझे सच का पता न चल जाए, तब तक मैं अमृत की मदद तो नहीं करूंगा, लेकिन अपनी तरफ से 'विष' को रोकने की कोशिश जरूर करता रहूंगा!
हमारे पास समय बहुत कम है!
मुझे तुम्हारी सत्यता को परखने का समय चाहिए अमृत! उसी के बाद मैं मदद करने या न करने का फैसला कर पाऊंगा!
यानी तू एक तुच्छ मानव... ब्रह्माण्ड के एक मामूली से ग्रह का प्राणी अब मेरी सत्यता को जांचेगा! निरादर! घोर निरादर! 'विष' ने तुझे जिंदा कैसे छोड़ दिया? तू तो मृत्यु के ही काबिल है! खैर, जो काम 'विष' अधूरा छोड़ गई...
...उसे मैं पूरा कर देता हूं! मैं इस बात पर ध्यान दे रहा था कि मेरी अमृत लहरियां तुझे कमजोर कर रही थीं! यानी तुझमें भी 'विष' वाली ही कमजोरी है। विष खत्म तो तू खत्म... मेरा अमृत तेरा विष खत्म कर देगा, और साथ-साथ तू भी खत्म हो जाएगा!
आऽऽऽह!
नागराज ने सर्पढाल से वार रोकने की कोशिश तो जरूर की, लेकिन उस तक पहुंची कुछ अमृत लहरियां ही उसके लिए काफी

आऽऽऽह!
अब तू मरेगा नागराज! घिसट-घिसट कर मरेगा। तूने क्या समझा? अगर तू मेरी मदद नहीं करेगा तो मेरी मदद करने वाला कोई बचेगा ही नहीं! अरे, अमृत तो मृतों तक से काम करवा लेता है!... और यहां पर तो मेरा काम करने के लिए कई जीवित वस्तुएं उपलब्ध हैं!...
... जैसे ये वृक्ष! मेरा अमृत पीकर इसमें अतिरिक्त 'जीवन शक्ति' भर जाएगी! और फिर इसकी जड़ें ढूंढेंगी 'विष' को! चाहे 'विष' यहां से दो कदम दूर हो या दो हजार योजन!
पेड़ की जड़ें आश्चर्यजनक रूप से बढ़ कर 'विष' की दिशा में ऐसे लपकीं जैसे कुत्ता गंध सूंघकर अपराधी को कुछ दिन बाद भी ढूंढ निकालता है–
और साथ ही साथ अमृत भी उस दिशा में बढ़ चला–
नागराज को मरने के लिए छोड़कर–
आऽऽऽह! मेरा विष तेजी से नष्ट हो रहा है! और इस 'अमृत' से बचने का मेरे पास कोई उपाय नहीं है! अब मैं यहीं पर दम तोड़ दूंगा, और उधर 'विष' और अमृत के टकराव में न जाने कितनी तबाही फैलेगी, और न जाने कितनी जानें जाएंगी!...
... पर मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा! जब मैं अपने-आपको ही नहीं बचा पा रहा हूं, तो दूसरों को क्या बचाऊंगा! दूसरे विष को तो मैं अपने विष से काटने का प्रयास कर सकता हूं!
क्योंकि लोहे को लोहा ही काटता है! पर अमृत को कैसे... अरे!

लोहा, लोहे को काटता है। विष को विष के दूसरे रूप से काटा जा सकता है तो अमृत यानी विष के काट को भी, विष के काट से काटा जा सकता है। और वह काट मेरे पास है। उस एंटी-वेनम के रूप में, जो डॉक्टर करुणाकरन ने मुझे दी थी।...
... पर इसका असर उल्टा भी हो सकता है। हो सकता है कि जैसे कभी-कभी विष, विष से मिलकर और उग्र हो उठता है, वैसे ही कहीं मेरे विष की काट मेरे शरीर में बह रहे अमृत के असर को और तेज करके मेरी मौत को और शीघ्र न बुला ले।...
...पर और कोई रास्ता नहीं है! मौत धीरे आए या तेज, आनी तो है ही! बच सकने का सिर्फ यही एक रास्ता है। बस अब देव-कालजयी से यही प्रार्थना है कि मेरे विष की काट अमृत के असर को नष्ट कर सके।
नागराज एक सांस में पूरा एंटीवेनम पी गया—
और उसके सारे शरीर की हरकतें धीरे-धीरे बन्द होने लगीं। सांसें भारी हो उठीं, हाथ-पैर शिथिल हो गए, आंखें अपने-आप मुंदने लगीं और दिल की धड़कन अपना दम तोड़ने लगी—
शायद 'एंटीवेनम' अपना वही असर दिखा रहा था, जिसका नागराज को डर था! मौत के आने की गति और तेज हो गई थी—

और वहां से अस्सी किलोमीटर दूर 'विष' को शिकार करने के लिए पूरा जंगल मिल गया था–
महानगर का इमारती जंगल–
आहा! यहां पर मुझे विनाश फैलाने के लिए बहुत सारी चीजें मिलेंगी। वाह! वाह! विनाश ही विनाश!
लोग भागे! कुछ भागे, कुछ मुसीबत से गुजर गए, और कुछ दुनिया से ही गुजर गए–
'का रूप और उसके प्रगट होने का तरीका लोगों को भयभीत कर देने के लिए काफी था
हानगर वासियों को ऐसी किसी मुसीबत से ती चैनेल ने पहले ही सतर्क कर दिया था–
पर बचाव का तरीका क्या हो सकता है, यह खुद भारती को भी नहीं पता था–
गॉड! ओ गॉड! क्या मुसीबत आ गई? ती जहरीले जानवरों चने का इन्तजाम कर ये! अब क्या करूं? क पार्क के डायरेक्टर टर करुणाकरन से क करती हूं। वही बतों से बचने का रास्ता बता ते हैं!
करुणाकरन भी भारती चैनेल द्वारा ऊंची इमारतों पर स्थित कैमरों से इस हादसे का सीधा प्रसारण देख रहे थे–
हां, भारती! मैं भी इस हादसे को देख रहा हूं... पर नागराज अभी तक कहीं नजर नहीं आ रहा है! वह जहरीले जानवरों की तलाश में सुभाष नेशनल पार्क गया था? अच्छा! ठीक है भारती, मैं कुछ करता हूं! ...

डॉक्टर करुणाकरन के माथे पर चिंता की लकीरें गहराने लगी थीं-
मुझे नागराज का इंतजार नहीं करना चाहिए! अगर वह अभी तक नहीं आया है तो वह जरूर किसी बड़ी मुसीबत में फंस गया है। मुझे तो किसी अनहोनी की आशंका लग रही है! पर मैं नागराज के अपने ऊपर बने विश्वास को टूटने नहीं दूंगा!...
... मैं खुद जाऊंगा इस मुसीबत को रोकने! अपना सारा 'जहर-विज्ञान' इस मुसीबत को रोकने के लिए दांव पर लगा दूंगा!
डॉक्टर करुणाकरन तेजी से अपने सामानों की बटोरने लगे-
'विष' का कहर बदस्तूर जारी था-
ये... ओह... क्या कह रहे थे मानव इसको? हां बिल्डिंग! इस बिल्डिंग को गलाने में बड़ा मजा आएगा!
'विष' ने कुछ खास विषों का मिश्रण बिल्डिंग पर छोड़ा-
और पूरी बिल्डिंग मोम की तरह गलने लगी। यही हाल बिल्डिंग में मौजूद लोगों का भी हुआ-
हा हा हा! विष ने यहां पर काफी विनाश फैला लिया! अब यहां से चलना चाहिए!

क्योंकि अब अमृत को यहां पर आने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा! इस वक्त मैं उसके सामने गई तो मुझे मात खानी पड़ेगी! इस... क्या नाम... बिल्डिंग को गलाने में मेरा काफी जहर खर्च हो चुका है! अब चलकर जरा सा आराम किया जाए, ताकि मैं तरोताजा भी हो जाऊं, और मेरे खत्म हुए कुछ विष फिर से मेरे शरीर में पैदा हो जाएं!
अगर तू सच कह रही है, तब तो मैं एकदम ठीक समय पर यहां आया हूं...
कौन?
...करुणाकरन! और मैं तेरे लिए तैयारी करके आया हूं। जरूर तूने ही उन जानवरों के अंदर जहर भरा होगा! और इससे मुझे यह पता चल चुका है कि तू जहरों का मिश्रण छोड़ती है!
इसीलिए मैं यह 'वेनम एनालाइजर' लेकर आया हूं। यह तेरी विष फुहार का तुरन्त विश्लेषण करके उसके लिए जहर की काटों का मिश्रण बना देगा। पर यह बाद की बात है। पहले तो मैं तुझे विष मिश्रण छोड़ने का मौका ही नहीं दूंगा!
आऽऽऽह!
आऽऽऽह! इस विषकाट ने तो मेरे बचे-खुचे विष को भी नष्ट करना शुरू कर दिया है। और बगैर विष के तो मेरा अस्तित्व ही नहीं रहेगा! कुछ करना होगा! वरना या तो मैं पहले मर जाऊंगी या अमृत आकर मेरा खेल खत्म कर देगा!
हे भुजंगदेव, ये किस ग्रह पर मरने के लिए आ गई मैं?

तू मुझे जरूरत से ज्यादा कमजोर समझ रहा है करुणाकरन! मेरे पास अभी भी इतना विष है कि तुझे गलाकर पानी बना दूं!
उसकी नौबत नहीं आएगी 'विष'! तेरे मुंह या शरीर से विष की फुहार निकलते ही मेरा 'वेनम एनालाइजर' उस मिश्रण के विषों का विश्लेषण करके पहचान लेगा!...
... और अपने आप उस विष मिश्रण का 'एंटीवेनम मिश्रण' बनाकर तेरे विष की काट देगा!
ओह! यह मानव तो मुझ पर भारी पड़ने लगा है!
अगर मेरे शरीर में जल्दी ही विषों की उत्पत्ति न हुई तो इसी ग्रह पर मेरी समाधि बन जाएगी!
लेकिन विष तो धीरे-धीरे ही बने... ओह!
कुछ देखकर विष की आंखें चमक उठीं–
कुछ ही पलों बाद 'विष' पिघल रही बिल्डिंग में से अपना विष वापस चूस रही थी–
पहली बार मेरे ही विष से गली वस्तु ने मेरी जान को बचाया है! अब मेरे शरीर में विषों की मात्रा बढ़ रही है!
?
अब तेरी मौत करीब आ रही है मानव! अब मैं इतनी तेजी से अलग-अलग विष मिश्रणों को बनाकर फेकूंगी कि तेरा 'एनालाइजर' भ्रमित हो जाएगा!

करुणाकरन ने इस स्थिति की कल्पना नहीं की थी–
ओह! यह तो सचमुच इतनी तेजी से अलग-अलग मिश्रणों को छोड़ रही है कि मेरे 'एनालाइजर' पर उसे विश्लेषित करने में काफी जोर पड़ रहा है!
इसके कंप्यूटराइज्ड सर्किटों में शॉर्ट-सर्किट हो रहा है।...
...और अब यही हाल तेरा होगा मानव!
घातक विषों का मिश्रण करुणाकरन को गलाने के लिए आगे लपक पड़ा–
लेकिन उसको किसी और ने अपने शरीर पर झेल लिया–
नागराज! तुम आ गए? मैं तो समझ रहा था कि तुम...तुम...
जी कहते आपकी जबान लड़खड़ा रही है। वैसा ही होने वाला था डॉक्टर! मैं तो मौत की कगार पर लगभग पहुंच ही चुका था। पर आपके द्वारा दिए गए एंटीडोट ने मेरी जान बचा ली!
ओह! यानी एंटीडोट ने इस 'विष' के जहर को काट दिया!
'विष' के जहर को नहीं, बल्कि अमृत के जहर की काट की!

अमृत ! यानी- यानी तू अमृत से भी टकरा चुका है ! और उससे टकराकर भी बच गया ? पर कैसे ? अमृत के पास तो हर विष की काट है। जीवनदायी शक्तियां हैं उसके पास ! तू उससे कैसे बच गया ? तेरा जहर तो खत्म ही जाना चाहिए था ! और तुझे एक आम मानव बन जाना चाहिए था !
और अगर ऐसा हो जाता तो तू मेरे विष वारों से कभी बच नहीं पाता !
अमृत ? यह अमृत कौन है ?
इसको पकड़ने आने का दावा करने वाला एक परग्रही ! ये दोनों परग्रही हैं। किसी दूसरे ग्रह से आए हैं ! अमृत ने मुझसे सहयोग मांगा था ! पर उसके इरादे स्पष्ट न होने के कारण मैंने इंकार कर दिया ! तब उसने अमृत यानी विषकाट का प्रयोग करके मेरा विष खत्म करने और मुझे मारने की कोशिश की !
बचने का और कोई रास्ता न पाकर मैं आपके द्वारा दिया गया 'एंटीवेनम' पी गया। पहले तो मेरे शरीर में जीवन के सभी संकेत शिथिल होने लगे !
पर न जाने कैसे आप के 'अमृत' ने उस अमृत के असर को काट दिया ! मैं बच गया !
मैं समझ गया नागराज ! जैसे इस 'विष' के जहर के खिलाफ तुम्हारे शरीर ने प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली थी, वैसे ही उस 'एंटीवेनम' ने अमृत के 'विषकाट' को रोकने के लिए तुम्हारे शरीर में दूसरी प्रतिरोधक क्षमता पैदा करने में मदद की है ! अब शायद अमृत की विषकाट तुम पर असर करेगी भी नहीं !
ऐसा क्यों डॉक्टर करुणाकरन ?
देखो, जैसे हमको जीवन में एक बार ही 'चिकन पॉक्स' होता है। फिर हमारा शरीर हमेशा के लिए उसके खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेता है। वैसा ही इस अमृत के विष के साथ भी होना चाहिए !
यह तो गड़बड़ पर गड़बड़ हुई जा रही है। पहले किसी ग्रह पर काम करने में दिक्कत नहीं आई थी !
लेकिन यहां पर तो ये नाग मानव बार-बार अड़ंगा डाल रहा है ! मेरे विष को भी पचा जा रहा है। और अमृत के अमृत को भी !
खैर ! अब मैं संभल गई तो यहां से फटाफट निकल लेना चाहिए !

वरना कहीं अमृत मुझे ढूंढता-ढूंढता यहां आ गया तो सब गड़बड़ हो ऽऽऽऽ यह क्या?
जमीन में से पेड़ की जड़ें निकलकर मुझे शिकंजे में कस रही हैं। और इनका शिकंजा कसते ही मेरे विष नष्ट होने शुरू हो गए हैं!
इसका एक ही अर्थ हो सकता है। और वह ये कि ये जड़ें, अमृत द्वारा भेजी गई हैं। और अब वह भी इसके पीछे-पीछे यहां आता ही होगा। मुझे इनसे आजाद होना होगा। होना ही होगा! पर कैसे? कैसे? कैसे?
ये जड़ें तो सचमुच अमृत ने ही भेजी थीं। यानी अब अमृत और 'विष' का टकराव होने ही वाला है। देखते हैं अब क्या होता है!

नहीं, नागराज! ऐसा हुआ तो गजब हो जाएगा! तुमको 'विष' को इस कैद से मुक्त कराना होगा!
ऐसा क्यों डॉक्टर करुणाकरन? अमृत को आकर इसे पकड़ लेने दीजिए। यह तो वैसे भी तबाही फैला रही है!
यह तो शायद मामूली तबाही है नागराज! लेकिन जब दो विपरीत शक्तियां सामने आकर टकराएंगी तो वे दोनों खुद तो नष्ट होंगी ही, लेकिन साथ ही साथ वातावरण में इतनी ज्यादा विष और अमृत ऊर्जा फैलेगी जो खुद नष्ट होने के पहले महानगर को नष्ट कर देंगी!
आप ठीक कह रहे हैं डॉक्टर! इस बात को तो मैं नजर अन्दाज कर गया था!
अगर इन दोनों की लड़ाई होनी ही है तो आबादी वाले इलाके से दूर होनी चाहिए। जहां विष और अमृत किसी को नुकसान न पहुंचा पाएं!
आरी की तरह घूमते नागफनी सर्पों ने उस जड़ को काट डाला जिसने 'विष' को अपने शिकंजे में जकड़ा हुआ था। और 'विष' आजाद हो गई—
लेकिन 'विष' ने आजाद होकर मुसीबतों को और बढ़ा दिया-
अरे! 'विष' जहां-जहां भाग रही है, पेड़ की जड़ें वहीं-वहीं से निकलकर उसे पकड़ने की कोशिश कर रही हैं। और इस चेष्टा में ये जड़ें और तबाही फैला रही हैं! इनको रोकना होगा!

अमृत के इशारे पर जो जड़ें नेशनल पार्क से चली थीं, उसमें से सिर्फ एक जड़ ही महानगर की दिशा में आई थी! बाकी जड़ें अलग-अलग दिशाओं में गई थीं। यानी यह एक ही जड़ है, जो यहां तक आई है! इसको रोकने का एक आसान सा तरीका यह है कि मैं इसको ही नष्ट कर दूं! अपने सर्पों की मदद से मुख्य जड़ तक पहुंचना होगा!
सर्प सेना ने जड़ के एक तंतु के पास से जमीन को खोदना शुरू कर दिया-
और कुछ ही पलों बाद नागराज मुख्य जड़ के पास पहुंच चुका था-
इस जड़ को उखाड़ने का कोई फायदा नहीं है!
क्योंकि ऐसी कोशिश करने पर पूरे अस्सी किलोमीटर तक जड़ उखाड़ते जाना पड़ेगा! इसके अमृत को अपने विष से काटना होगा!
नागराज की तीव्र फुंकार ने जड़ को कुछ देर के लिए तो मुरझा दिया-
पर कहते हैं कि वृक्षों में जीवन के साथ-साथ प्रतिरक्षा करने की भी तीव्र समझ होती है-
जड़ का एक मोटा तंतु नागराज के मुंह पर आ लिपटा-
चकित से नागराज ने अपनी कलाईयों से नाग-फनी सर्प निकालने की चेष्टा की-

लेकिन जड़ के तंतुओं ने उसकी कलाइयों को दबोचकर, सांपों का रास्ता रोक दिया–
ओह! अमृत से इस जड़ में अद्भुत जीवन शक्ति आ गई है। ये मेरे द्वारा किसी भी ऐसे वार को रोकना चाहता है, जो इसके लिए घातक हो सके! अब ये मेरा दम घोटना चाहता है!
लेकिन मेरा दम घोटना इतना आसान नहीं है! क्योंकि मैं ऐसे किसी भी शिकंजे से...
...इच्छाधारी कणों में बदलकर आराम से बाहर निकल सकता हूं। पर यह चाल मुझे तो बचा सकती है, पर इस तोड़-फोड़ को नहीं! ...
... मेरे जहर का भी इस पर कोई खास असर होता नहीं दिख रहा, क्योंकि इसका आकार अति विशालकाय है! ...
... इसको मारने के लिए मुझे अपना पूरा विष खर्च कर देना होगा! और ऐसा करना मूर्खता होगी!
अब इसके अमृत वाले असर को कैसे काटूं?
नागराज के कुछ सोचने से पहले ही हमला दुबारा शुरू हो गया
ओह!
यह जड़ मेरा पीछा छोड़ने वाली नहीं है! बार-बार इच्छाधारी कणों में बदलकर बचाव करते रहने से मैं बचता रहूंगा, और इसके अन्य तंतु तबाही फैलाते रहेंगे!
शीघ्र ही कोई ऐसा तरीका सोचना पड़ेगा, जो मेरा विष भी बचा दे और इस विनाशकारी जड़ को नष्ट भी कर सके! इससे पहले तो मैंने 'अमृत' के विषकाट को अपने जहर के एंटीबॉडीज से...आहा! मिल गया रास्ता!
नागराज अपनी अतिमानवीय नागशक्ति से जड़ को खींचता हुआ एक खास तरफ ले चला–

उस तरफ, जहां डॉक्टर करुणाकरन के हाथों गिरा 'वेनम स्नालाइजर' पड़ा था-
मैं जब यहां आ रहा था तो मैंने अपनी सर्प श्रवण इंद्रियों द्वारा डॉक्टर करुणाकरन को इस 'वेनम स्नालाइजर' के बारे में बताते हुए भी सुना था, और इस प्रयोग को करते हुए भी... इस जड़ से लड़ते हुए मुझे एकाएक याद आ गया कि इस 'स्नालाइजर' के अन्दर मेरे और अन्य दूसरे घातक सर्पों के विष द्वारा बने हुए 'कई 'एंटी-वेनम' भरे हुए हैं!...
...अगर मेरे शरीर में भरे अमृत को मेरा एंटी-वेनम काट सकता है तो इस जड़ में भरे अमृत को भी 'एंटी-वेनमों' का ये मिश्रण काट सकता है!
जड़ के तंतुओं से होता हुआ एंटीवेनमों का मिश्रण तेजी से जड़ में फैलने लगा-
और जड़ में भरा अमृत निष्क्रिय होने लगा-
ओह! जड़ें मुरझा रही हैं। मेरा वार सटीक पड़ा है!
नागराज!
नागराज! तुमने तो कमाल कर दिया! जड़ों द्वारा तबाही समाप्त होती दिख रही है!
हां, डॉक्टर! पर आप कहां चले गए थे?
उस 'विष' के पीछे-पीछे गया था! ताकि मैं देख सकूं कि वह कहां जा रही है! पर एक दूसरा बड़ा काम हो गया!
मैं उसको यह समझाने में सफल हो गया कि उसका आबादी वाले इलाके में रहना खतरे से खाली नहीं है! ऐसा करने से अमृत को उसे ढूंढने में आसानी रहेगी!
तो अब 'विष' कहां चली गई है?

greencoolde13

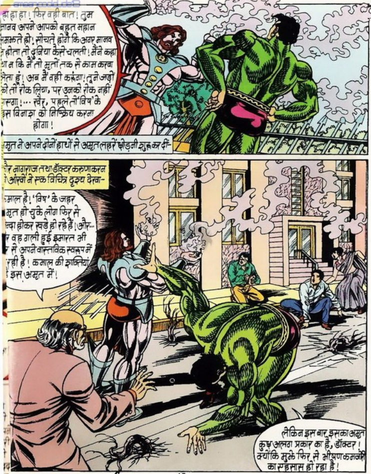
हा हा हा! फिर वही बात! तुम मानव अपने आपको बहुत महान समझते हो! सोचते होगे कि अगर मानव न होता तो दुनिया कैसे चलती! मैंने कहा था न कि मैं तो मृतों तक से काम करवा लेता हूं! अब मैं वही करूंगा! तूने जड़ों को तो रोक लिया, पर उनको रोक नहीं पाएगा!... खैर, पहले तो 'विष' के इस विनाश को निष्क्रिय करना होगा!
मृत ने अपने दोनों हाथों से अमृत लहरें छोड़नी शुरू कर दीं-
और नागराज तथा डॉक्टर करुणाकरन की आंखों ने एक विचित्र दृश्य देखा-
कमाल है! 'विष' के जहर से मृत हो चुके लोग फिर से जिन्दा होकर खड़े हो रहे हैं! और... और वह गली हुई इमारत भी फिर से अपने वास्तविक स्वरूप में आ रही है! कमाल की शक्तियां हैं इस अमृत में!
लेकिन इस बार इसका अमृत कुछ अलग प्रकार का है, डॉक्टर! क्योंकि मुझे फिर से भीषण कमजोरी का एहसास हो रहा है!

मैं समझ गया नागराज ! जैसे 'विष' अलग अलग' जहर-मिश्रणों द्वारा अलग-अलग प्रकार की तबाही फैलाती है। वैसे ही यह अमृत भी उन विभिन्न मिश्रणों को काटने के लिए अलग अलग प्रकार के अमृत फेंकता होगा। तुम्हारा शरीर पहले वाले अमृत के लिए तो अभी भी प्रतिरोधक क्षमता रखता है। पर यह नया अमृत तुम्हारे जहर को फिर काट रहा है!
आऽऽऽह ! यानी मैं जब-जब अमृत द्वारा छोड़ी गई किसी नई अमृत लहरी का सामना करूंगा, तब-तब मुझ पर कमजोरी का दौरा पड़ेगा !
शायद आप ठीक कह रहे हैं! मुझमें फि से शक्ति आ रही है! लेकिन जब तक मैं कमजोर रहूंगा, उस बीच कोई भी मुझ प हमला करके मेरी जान ले सकता है!
ऐसा ही लगता है नागराज ! पर यह कमजोरी की स्थिति ज्यादा देर तक नहीं रहेगी। जैसे ही तुम्हारी कोशिकाएं इस अमृत मिश्रण की संरचना पहचान लेंगी, वे अपने-आप प्रतिरोधक रसायन पैदा करना शुरू कर देंगी।
तुम्हारे शरीर में ये प्रतिरोधक अपना ही 'एंटीवेनम' पीने के कारण पैदा है। तुम्हारी कोशिकाएं उसी के कारण अ की भी काट पैदा कर पा रही हैं! हो सकता कि वह प्रतिरोधक रसायन पैदा करने की और तेज कर दे और तुमको कमजोरी कम देर के लिए महसूस हो !
मैं देव कालजयी से प्रार्थना करता हूं कि ऐसा ही हो! फिलहाल तो मुझमें लगभग पूर्ण शक्ति आ गई है! लेकिन... लेकिन...
... सारी तबाही फिर से ठीक कर देने के बाद अब अमृत अपनी अमृत तरंगें क्यों छोड़ रहा है?
'विष' को ढूंढ़ने के लिए मदद खड़ी कर रहा हूं नागराज! मृतों को जिन्दा कर रहा हूं। अब मैं जिन्दों को अमृत पान करा कर अतिरिक्त जीवन शक्तियां नहीं देना चाहता!

नागराज जानता था कि अमृत बात को बढ़ा चढ़ाकर नहीं बता रहा था-
अमृत की लहरें महानगर के अलग-अलग हिस्सों की तरफ लपकीं। पहली अमृत लहर महानगर के सत्यबोध घाट पर अंतिम संस्कार पा रहे एक शव से जा टकराई-
यह क्या है?
और धू-धू करके जल रहे शव में फिर से प्राण दौड़ने लगे-
हे भगवान! य-यह क्या हो रहा है?
कलियुग है! शैतान का राज है... भगवान का नहीं! भागो!
इससे ही कुछ मिलती-जुलती घटना गोरा कब्रिस्तान में भी घटने जा रही थी-
यह तूने क्या किया मूर्ख! नई कब्र खोदने के स्थान पर एक पुरानी कब्र खोद दी?
यहां कोई पत्थर वगैरह लगा होता तो पता भी चलता...
...खैर, गलती हो गई! इसे भरकर दूसरी कब्र खोद...अरे! यह क्या है?
अमृत लहरें उस खुदी कब्र से निकले सड़े-गले शव को भी जीवन प्रदान कर चुकी थीं-
पूरे महानगर में भय और आतंक फैल रहा था! सड़क पर कुचली पड़ी एक कुत्ते की लाश का यकायक जिन्दा हो उठना और भला क्या असर डालता-
मृतों को जिन्दगी प्रदान की जा रही थी! सिर्फ एक मकसद के लिए-

और यह मकसद था-
विष की खोज-
बस! अब 'विष' नहीं बच सकती! चारों तरफ से घेर लूंगा मैं उसे!
इस बार मेरा रास्ता मत काटना नागराज! वरना मैं सिर्फ जीवन देता ही नहीं, छीन भी लेता हूं!
ये जा रहा है! इसका पीछा करो नागराज!
नहीं डॉक्टर! ये तो न जाने कहां-कहां भटकेगा! मुझे इससे पहले विषतक पहुं-चना है!
फिर तुम क्या करोगे?
अभी तय नहीं किया है, डॉक्टर करुणाकरन! फिलहाल तो मुझे यह पता लगाना है कि 'मृतों' को जिन्दा करने से अमृत का क्या तात्पर्य था! मैं अपने जासूस सर्पों से पूरे महानगर की रिपोर्ट लेता हूं!
नागराज, अपने जासूस सर्पों से मानसिक संकेत प्राप्त करने में जुट गया-
और अगले ही पल वह चौंक उठा-
मुझे तुरंत जाना होगा डॉक्टर करुणाकरन! अमृत ने सचमुच कुछ मृतों को जीवित कर दिया है! और वे शायद 'विष' की तलाश में पूरे महानगर में आतंक और तबाही फैला रहे हैं!
नागराज तुरंत एक दिशा में रवाना हो गया-
खतरे के मानसिक संकेत कई स्थानों से आ रहे हैं! मैं किसी एक दिशा में ही जा सकता हूं। मैं फिलहाल उधर ही जाऊंगा, जहां खतरे के सबसे तीव्र संकेत आ रहे हैं!

खतरे के सबसे तीव्र संकेत महानगर के इस इलाके से आ रहे थे-
'विष'! इस दिशा से आ रही है उसके जहर की गंध! हाsss sss ह!
जलते शव के उस दिशा में बढ़ते कदमों को-
नागराज ने और तेज कर दिया-
मुझे यहां पहुंचने में थोड़ी देर हो गई है! पर मैं इसको और तबाही नहीं करने दूंगा!
धाड़
अमृत ने इसमें जीवन शक्ति री है! यानी इसकी अमृतरूपी ीवन शक्ति को मेरा विष काट सकता है!
फूऊऊऊऊ
गराज ने अपनी तीव्र विष फुंकार वार, जलते शव' पर किया-
और शव लड़खड़ा उठा-

amaancoddude18

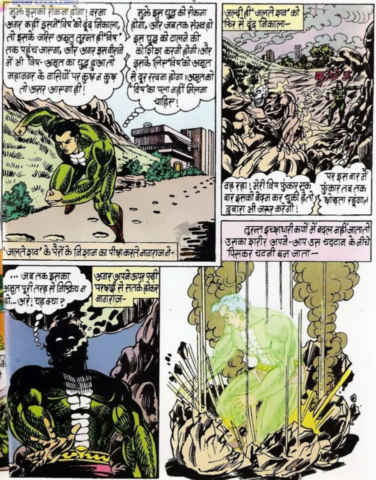
मुझे इसको रोकना होगा! वरना अगर कहीं इसने 'विष' को ढूंढ निकाला, तो इसके जरिए अमृत तुरन्त ही 'विष' तक पहुंच जाएगा, और अगर इस वीराने में भी विष-अमृत का युद्ध हुआ तो महानगर के वासियों पर कुछ न कुछ तो असर आएगा ही!
मुझे इस युद्ध को रोकना होगा, और जब तक संभव हो इस युद्ध को टालने की कोशिश करनी होगी। और इसके लिए 'विष' को अमृत से दूर रखना होगा। अमृत को 'विष' का पता नहीं मिलना चाहिए!
'जलते शव' के पैरों के निशान का पीछा करते नागराज ने-
जल्दी ही 'जलते शव' को फिर से ढूंढ निकाला-
वह रहा! मेरी विष फुंकार एक बार इसको बेदम कर चुकी है तो दुबारा भी जरूर करेगी!
पर इस बार मैं फुंकार तब तक छोड़ता रहूंगा।
... जब तक इसका अमृत पूरी तरह से निष्क्रिय न हो... अरे! यह क्या?
अगर अपने ऊपर पड़ी परछाईं से सतर्क होकर नागराज-
तुरन्त इच्छाधारी कणों में बदल नहीं जाता तो उसका शरीर अपने-आप उस चट्टान के नीचे पिसकर चटनी बन जाता -

amancooldude18

मिट्टी, आग को बुझा देती है, और आग मिट्टी को दहका देती है! अब बस, इन दोनों को ऐसी स्थिति में लाना है कि मुझ पर वार करते समय ये एक-दूसरे के सामने रहें! ऐसे! अब ये दोनों जब भी मुझ पर एक साथ वार करेंगे, मैं वारों के रास्ते से हट जाऊंगा!...
फक्क
...और इन दोनों के वार एक-दूसरे को ही बेदम कर देंगे!
और अब, जब ये दोनों बेदम हैं, मैं इनका अमृत काटकर इनको फिर से इनके वास्तविक मृत रूप में ले आऊंगा!
... जब तक इनका अमृत नष्ट नहीं हो जाता ऽऽऽऽ ह! आऽऽऽ ह!
नागराज को यह पता नहीं था कि 'अमृत' ने दो से ज्यादा मृत प्राणियों को जीवन प्रदान किया हुआ था-
खच
वाऊऽऽ
अपनी तीव्र विष फुंकार को तब-तक इन पर छोड़ता रहूंगा!...
ओह! यह मृत कुत्ता मुझे काटने के बाद भी नहीं गला। यानी इसके शरीर का अमृत इसे बचा रहा है!...
... पर इसके काटने से जो अमृत मेरे शरीर में पहुंच गया है! उससे, मुझे भीषण कमजोरी हो गई है!

और इस हालत में मैं इन तीनों प्राणियों का एक साथ सामना नहीं कर सकता! और ये तीनों अगर एक साथ मुझ पर हमला करेंगे, तो मुझे जरूर मार डालेंगे! और इस कमजोरी की हालत में मैं बचाव तक नहीं कर पाऊंगा। पर... पर ये तीनों 'जीवित मृत' प्राणी 'विष' की तलाश छोड़कर एकाएक मुझ पर क्यों टूट पड़े? जहां तक मैं जानता हूं, अमृत ने इन्हें खास 'विष' की तलाश करने के लिए ही जीवन प्रदान किया था ओऽऽऽ! कुछ-कुछ समझ में आ रहा है!...
... जब-जब 'विष' ने या विष भरे पशुओं ने मुझ पर जहर मिश्रणों से हमला किया, तब-तब मेरे शरीर में गए 'जहर मिश्रणों' के खिलाफ मेरी शरीर की शिकाओं ने प्रतिरोधक शक्ति पैदा कर ली! यानी मेरे शरीर में भरा 'विष' का जहर मिश्रण नष्ट नहीं हुआ। सिर्फ उसने मेरे शरीर को नुकसान पहुंचाना बन्द कर दिया! अब इतनी तीव्र विष फुंकार छोड़ने के कारण मेरे शरीर में भरा जहर मिश्रण भी ऊपर आ गया है। और ये तीनों उसी जहर मिश्रण का आभास पाकर मुझ पर हमला कर रहे हैं! यानी ये मुझे ही 'विष' समझ रहे हैं!
अगर मैं ठीक समझ रहा हूं तो इनको रोकने का एक आसान सा तरीका है। मैं अपने शरीर में भरे 'विष' के जहर मिश्रण को इन तीनों पर छोड़ देता हूं! अब ये जहर मिश्रण इनके शरीर में जाते ही...

... ये एक-दूसरे को ही 'विष' समझने लगेंगे ! और फिर आपस में ही लड़ते रहेंगे ! ऐसे !
तड़ाााक
धाड़ड़ ढड़ड़
क्यांऊ
लेकिन इस व्यवधान ने मेरा काफी समय खराब कर दिया है। मुझे तुरंत विष को ढूंढना होगा ! क्योंकि अमृत अब किसी भी वक्त यहां पर पहुंच सकता है !
लेकिन तभी- एक ख्याल दिमाग में कौंधते ही नागराज के कदम रुक गए-
नहीं ! ऐसे नहीं ! जब अमृत द्वारा जीवित किए मृत कुत्ते के काटने का मुझ पर तेज असर हो सकता है तो स्वयं अमृत न जाने मेरा क्या हाल करेगा ! कमजोरी चाहे दो पल की ही रहे परन्तु इतनी देर में तो अमृत मेरा परलोक का टिकट कटा देगा !
और 'विष' भी कम खतरनाक नहीं है ! ये दोनों एक दूसरे के दुश्मन ही सही, पर मेरे भी दोस्त नहीं हैं ! मुझे अपनी रक्षा का इंतजाम करने के बाद ही 'विष' की तलाश में जाना चाहिए !
'विष' एक सुरक्षित गुफा में छुपी बैठी थी-
थोड़ी देर पहले तक मुझे वातावरण में अमृत लहरियों का आभास हो रहा था पर अब वह आभास खत्म हो गया है ! क्या अमृत यहां पर आकर वापस लौट गया है !
अमृत अभी तक तो नहीं आया है, पर जल्दी ही आता होगा !
कौन ? नागराज ! तुमने मुझे कैसे ढूंढ निकाला ?
अपने जासूस सर्पों की मदद से ! और जिन अमृत लहरियों का तुमको आभास हो रहा था...

amancooldude8

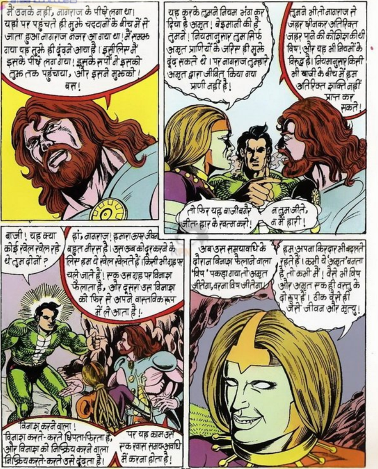
मैं उनके नहीं, नागराज के पीछे लगा था। यहां पर पहुंचते ही मुझे चट्टानों के बीच में से जाता हुआ नागराज नजर आ गया था! मैं समझ गया यह तुझे ही ढूंढने आया है। इसीलिए मैं इसके पीछे लग गया! इसके सर्पों ने इसको तुझ तक पहुंचाया, और इसने मुझको! बस!
यह करके तुमने नियम भंग कर दिया है अमृत! बेइमानी की है तुमने! नियमानुसार तुम सिर्फ अमृत प्राणियों के जरिए ही मुझे ढूंढ सकते थे। पर नागराज तुम्हारे अमृत द्वारा जीवित किया गया प्राणी नहीं है!
तुमने भी तो नागराज से जहर छीनकर अतिरिक्त जहर पाने की कोशिश की थी विष! और यह भी नियमों के विरुद्ध है। नियमानुसार किसी भी बाजी के बीच में हम अतिरिक्त शक्ति नहीं प्राप्त कर सकते!
तो फिर यह बाजी बगैर जीत-हार के खत्म करो!
न तुम जीते, न मैं हारी!
बाजी! यह क्या कोई खेल खेल रहे थे तुम दोनों?
हां, नागराज! हमारा अमर जीवन बहुत नीरस है। उस ऊब को दूर करने के लिए हम ये खेल खेलते हैं। किसी भी ग्रह पर चले जाते हैं! एक उस ग्रह पर विनाश फैलाता है, और दूसरा उस विनाश को फिर से अपने वास्तविक रूप में ले आता है!
विनाश करने वाला! विनाश करते-करते छिपता-फिरता है, और विनाश को निष्क्रिय करने वाला निष्क्रिय करते-करते उसे ढूंढता है।
पर यह काम उसे एक खास समय-अवधि में करना होता है!
अब उस समयावधि के दौरान विनाश फैलाने वाला 'विष' पकड़ा गया तो अमृत जीतेगा, वरना विष जीतेगा!
हम अपना किरदार भी बदलते रहते हैं। कभी ये 'अमृत' बनता है, तो कभी मैं! वैसे भी विष और अमृत एक ही वस्तु के दो रूप हैं। ठीक वैसे ही जैसे जीवन और मृत्यु!

तुम ये सारा विनाश और पुनर्निर्माण सिर्फ एक खेल के लिए करते हो? लोगों को इतना कष्ट और इतनी मानसिक त्रासदी सिर्फ अपनी जीत या हार के लिए देते हो!
अब क्या करें? और कोई रास्ता भी तो नहीं है। पर हमारे दांव मामूली नहीं होते! काफी कुछ दांव पर लगा होता है। जैसे इस बार का दांव है. यह पृथ्वी! जो जीतेगा वही इसका अभिभावक बनेगा! पर तूने तो जीत-हार का फैसला होने ही नहीं दिया...
पर हम बिना जीत-हार वाला खेल नहीं खेलते! इस खेल का तो फैसला होगा ही होगा! और इसका निर्णायक बनेगा तू! अब तू जिसे चाहेगा, वही इस पृथ्वी का स्वामी बनेगा! हम तेरे दाएं अंग में अमृत और बाएं अंग में जहर भर दे रहे हैं!
आऽऽऽऽ ह!
अब तू जिसे चाहे स्वीकार कर ले, और जिसे चाहे अस्वीकार! जिसे तू स्वीकार कर लेगा वही यह बाजी जीतेगा!
तू अब तक हमारे वारों से बचता आया है! जरूर तेरे शरीर में प्रतिरोधक शक्ति पैदा होती रही होगी। पर इस बार के मिश्रणों का प्रतिरोध कर सकने वाली शक्ति इस पूरे ब्रह्मांड में नहीं है!

आऽऽऽह! मैं चुनूं तो किसको? जितनी 'विष' खतरनाक है, उतना ही 'अमृत' खतरनाक है। पृथ्वी... आऽऽऽह! पृथ्वी इन दोनों में से किसी के भी हाथों में सुरक्षित नहीं है। ओऽऽऽह! मेरे... होश गुम हो रहे हैं!
जल्दी सोच, नागराज! जल्दी! तेरे पास सिर्फ पांच पल और हैं! फिर या तो मेरा विष तुझे मार देगा या अमृत का अमृत! जल्दी सोच!
और उसका तड़पता शरीर शांत पड़ गया–
यह तो मर गया! चलो, फिर से खेल शुरू करते हैं!
अब तो यह खतरा भी टल चुका है!
लेकिन नागराज पांच पलों तक यह निर्णय नहीं ले पाया–
हां! यह था तो बहुत खतरनाक! मुझे तो कभी-कभी यह डर भी लग रहा था...
...कि अगर इसने हम दोनों की उंगलियां आपस में मिला दीं तो विपरीत शक्तियां मिलने से पैदा होने वाली ऊर्जा हमको अपने आप हमारे ग्रहों पर वापस भेज देगी!
यह बताने के लिए धन्यवाद, विष और अमृत...
...मैं ऐसी ही किसी गुप्त बात के पता लगाने तक का इंतजार कर रहा था।
वह मैं नहीं, मेरी केंचुली है, जिसके अंदर भरी हुई मेरी सर्प सेना उसे मेरे मानसिक संकेतों के अनुसार चला फिरा रही है!
नागराज! तू! तू... तू तो उधर मरा पड़ा है!
मैं तो गुफा की छत पर चिपका यह सारा घटनाक्रम देख रहा था!

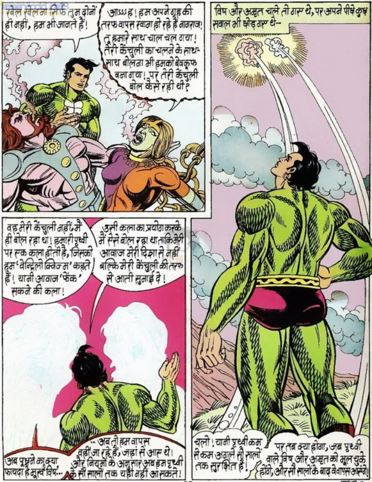
खेल खेल में सिर्फ तुम दोनों ही नहीं, हम भी जानते हैं!
आऽऽऽह! हम अपने ग्रह की तरफ वापस रवाना हो रहे हैं नागराज! तू हमारे साथ चाल चल गया! तेरी केंचुली का चलने के साथ-साथ बोलना भी हमको बेवकूफ बना गया! पर तेरी केंचुली बोल कैसे रही थी?
विष और अमृत चले तो गए थे, पर अपने पीछे कुछ सवाल भी छोड़ गए थे--
वह मेरी केंचुली नहीं, मैं ही बोल रहा था! हमारी पृथ्वी पर एक कला होती है, जिसको हम 'वेन्ट्रिलो क्विज़्म' कहते हैं! यानी आवाज 'फेंक' सकने की कला!
उसी कला का प्रयोग करके मैं ऐसे बोल रहा था ताकि मेरी आवाज मेरी दिशा से नहीं बल्कि मेरी केंचुली की तरफ से आती सुनाई दे!
अब पूछने का क्या फायदा है मूर्ख विष--
--अब तो हम वापस वहीं जा रहे हैं, जहां से आए थे। और नियमों के अनुसार अब हम पृथ्वी के सौ सालों तक यहां नहीं आ सकते!
चलो! यानी पृथ्वी कम से कम अगले सौ सालों तक सुरक्षित है!
पर तब क्या होगा, जब पृथ्वी वाले विष और अमृत को भूल चुके होंगे, और सौ सालों के बाद वे वापस आएंगे!



समाप्त